

नर्मदा चालीसा

दोहा 1

देवि पूजिता नर्मदा, महिमा बड़ी अपार।
चालीसा वर्णन करत, कवि अरु भक्त उदार॥

दोहा 2

इनकी सेवा से सदा, मिटते पाप महान।
तट पर कर जप दान नर, पाते हैं नित ज्ञान॥

चौपाई 1

जय-जय-जय नर्मदा भवानी।
तुम्हरी महिमा सब जग जानी॥

चौपाई 2

अमरकण्ठ से निकलीं माता।
सर्व सिद्धि नव निधि की दाता॥

चौपाई 3

कन्या रूप सकल गुण खानी।
जब प्रकटीं नर्मदा भवानी॥

चौपाई 4

सप्तमी सूर्य मकर रविवारा।
अश्वनि माघ मास अवतारा॥

चौपाई 5

वाहन मकर आपको साजें।
कमल पुष्प पर आप विराजें॥

चौपाई 6

ब्रह्मा हरि हर तुमको ध्यावैं।
तब ही मनवांछित फल पावैं॥

चौपाई 7

दर्शन करत पाप कटि जाते।
कोटि भक्त गण नित्य नहाते॥

चौपाई 8

जो नर तुमको नित ही ध्यावैं।
वह नर रुद्र लोक को जावैं॥

चौपाई 9

मगरमच्छ तुम में सुख पावैं।
अन्तिम समय परमपद पावैं॥

चौपाई 10

मस्तक मुकुट सदा ही साजें।
पांव पैजनी नित ही साजें॥

चौपाई 11

कल-कल ध्वनि करती हो माता।
पाप ताप हरती हो माता॥

चौपाई 12

पूरब से पश्चिम की ओरा।
बहती माता नाचत मोरा॥

चौपाई 13

शौनक ऋषि तुम्हरी गुण गावैं।
सूत आदि तुम्हरी यश गावैं॥

चौपाई 14

शिव गणेश भी तेरे गुण गावैं।
सकल देव गण तुमको ध्यावैं॥

चौपाई 15

कोटि तीर्थ नर्मदा किनारे।
ये सब कहलाते दुःख हारे॥

चौपाई 16

मनोकामना पूरण करती।
सर्व दुःख माँ नित ही हरती॥

चौपाई 17

कनखल में गंगा की महिमा।
कुरुक्षेत्र में सरस्वति महिमा॥

चौपाई 18

पर नर्मदा ग्राम जंगल में।
नित रहती माता मंगल में॥

चौपाई 19

एक बार करके असनाना।
तरत पीढ़ी है नर नाना॥

चौपाई 20

मेकल कन्या तुम ही रेवा।
तुम्हीं भजन करें नित देवा॥

चौपाई 21

जटा शंकरी नाम तुम्हारा।
तुमने कोटि जनों को तारा॥

चौपाई 22

समोद्धवा नर्मदा तुम हो।
पाप मोचनी रेवा तुम हो॥

चौपाई 23

तुम महिमा कहि नहिं जाई।
करत न बनती मातु बड़ाई॥

चौपाई 24

जल प्रताप तुममें अति माता।
जो रमणीय तथा सुख दाता॥

चौपाई 25

चाल सर्पिणी सम है तुम्हारी।
महिमा अति अपार है तुम्हारी॥

चौपाई 26

तुम में पड़ी अस्थि भी भारी।
छुवत पाषाण होत वर वारी॥

चौपाई 27

यमुना में जो मनुज नहाता।
सात दिनों में वह फल पाता॥

चौपाई 28

सरसुति तीन दिनों में देती।
गंगा तुरत बाद ही देती॥

चौपाई 29

पर रेवा का दर्शन करके।
मानव फल पाता मन भर के॥

चौपाई 30

तुम्हरी महिमा है अति भारी।
जिसको गाते हैं नर-नारी॥

चौपाई 31

जो नर तुम में नित्य नहाता।
रुद्र लोक में पूजा जाता॥

चौपाई 32

जड़ी बूटियां तट पर राजें।
मोहक दृश्य सदा ही साजें॥

चौपाई 33

वायु सुगन्धित चलती तीरा।
जो हरती नर तन की पीरा॥

चौपाई 34

घाट-घाट की महिमा भारी।
कवि भी गा नहिं सकते सारी॥

चौपाई 35

नहिं जानूँ मैं तुम्हरी पूजा।
और सहारा नहीं मम दूजा॥

चौपाई 36

हो प्रसन्न ऊपर मम माता।
तुम ही मातु मोक्ष की दाता॥

चौपाई 37

जो मानव यह नित है पढ़ता।
उसका मान सदा ही बढ़ता॥

चौपाई 38

जो शत बार इसे है गाता।
वह विद्या धन दौलत पाता॥

चौपाई 39

अगणित बार पढ़े जो कोई।
पूरण मनोकामना होई॥

चौपाई 40

सबके उर में बसत नर्मदा।
यहाँ वहाँ सर्वत्र नर्मदा॥

समापन दोहा

भक्ति भाव उर आनि के, जो करता है जाप।
माता जी की कृपा से, दूर होत सन्ताप॥